Written by साशा और बकुल
Thursday, 04 November 2010 13:59

Written by साशा और बकुल
Thursday, 04 November 2010 13:59

□□□□□ □□ □□ □□□ □□□□□

□□, □□ □□□ □□ □□ □□□□□□□ □□ □□□□□ □□ □□□□□

लेकनि इस सोच केपीछे कई सवाल थे जनिकेजवाब केलि□ बातचीत का □कऐसा सशक्त मंच जरूरी था, जहां लोगों को बुलाया जा□□ मसलन, आखरि मां केपेट में हमारी मौजूदगी का पता चलते ही हमें टुकडे-टुकडे कर देने की मनोवृत्ती, और इसकेलि□ हमारी मां तककी सेहत को नजरंदाज कर दयिा जाना क्या □कबडा सवाल नहीं है? खासकर उस समाज से जो महलिाओं को देवी केतौर पर तो पूजता है, चरणों पर गरिता है और कई-कई दनिों का उपवास तककर लेता है, लेकनि दैवीय महलिा से अलग उसमें जमीनी महलिा में फौरन भेदभाव आ जाता है□ उसे पैदा करने केलि□ मां चाहि□, दुलराने केलि□ दादी, चाची, मौसी, बुआ और राखी बंधवाने केलि□ बहन केसाथ ही अपनी संतान पैदा करने केलि□ □कअदद औरत चाहि□□ मगर उसी समाज केज्यादातर लोग अपनी बीवी की कोख में हमारी मौजूदगी तकसे सहम जाते हैं□ यह जानते हु□ भी कि □कमहलिा को अन्नपूर्णा का ओहदा देकर उसे घर भर को भोजन कराने केबाद कुछ भी ना बच पाने केचलते अक्सर भूखे रह जाने पर मजबूर हो जाना पडता है□
सारी बंदशिें हम पर ही क्यों? घर की मामूली चीजों की खरीद को छोड दें तो जमीन-जायदाद या लेन-देन केमामलों में बातचीत तककी जरूरत ही नहीं समझी जाती□ चाहे वह शाहबानो का मामला हो या आनर-कलिगि का, दण्ड केवल हमको ही क्यों दयिा जाता है? क्यों हमको बराबरी का दर्जा नहीं मलिता?
हम कसिी को कठघरे में खडा नहीं करना चाहते, मगर इस सवाल का जवाब तो चाहते ही हैं कि आखरि हमारे साथ यह भेदभाव कब तकचलेगा□ क्या यह सच नहीं है कि हम पर लगायी जाने वाली सारी बंदशिें मर्दों की नाकबचाये रखने केलि□ मूंछों की तरह हमें ही मरोडे-कुतरे जाने केतौर पर साफदखिायी पडती है?
इससे भी अलग □कबात और, मेरी बटियिा डॉट काम केजरयि हम पुरूषों से आगे नकिलने की बात या ख्वाहशि नहीं कर रहे हैं, बल्कि हम बराबरी का दर्जा दलिाने की वकालत कर रहे हैं□ इस पोर्टल को हम केवल महलिाओं तकही नहीं, बल्कि पुरूषों तकभी पहुंचाना चाहते हैं□ आखरि वे हमारी ही तरह पारविारकि रथ का दूसरा पहयिा भी तो हैं□ उन्हें इग्नोर नहीं कयिा जा सकता और हम ऐसा सोच भी नहीं सकते□ यह भी □कवजह है कि सारी गलती केवल मर्दों की ही नहीं होती, महलि□ं भी कई बार अपराधी दखिायी पडती हैं□ तो आइये, हम जीवन केहर उस पहलू पर चर्चा शुरू कर दें, जो हमारे खून तक में रची-बसी है□ वषिय कोई भी हो सकता है□ सारे कालम बने हैं□ कन्या भ्रूण हत्या केवरिोध से लेकर बहन, बेटी, भौजाई-ननद और अपने पूर्वज जैसे दादी-सास तकपर बात की जा सकती है□ आइये, संस्कृत पिर चर्चा करें या फरि अपने भाई-पति, दोस्त-पतपिर□ कहानयिां लखियि, कवति की पंक्तयिां परोइये□ जो जी में आये, कीजि□, भले ही वह चुटकुला क्यों ना हो□ हास्य-व्यंग्य या नबिंध केसाथ ही आप कोई बहस भी छेड सकती हैं□

और हां, आपकेआसपास कोई खास घटना घटी हो, मसलन कसिी महलिा ने सफलता केनये आयाम बनाये हों, कसिी महलिा केसाथ कोई घटना घटी हो जो उस इलाकेको स्तब्ध कर दे, महलिाओं का कहीं कोई बडा समारोह हो, कहीं लुप्तप्राय गीतों का कोई कार्यक्रम हो, कसिी पति, भाई, पतिया कसिी महलिा ने कसिी महलिा को आगे बढने का मार्ग-प्रशस्त कयिा हो या उसे रसातल तकपहुंचा दयिा हो तो हमें तत्काल सूचति कीजि□गा□
अपनी सारी कृतयिां और सूचना□ं हमें ईमेल पर भेजें□ हमारा पता है---meribitiyakhabar@gmail.com
आप चाहें तो हमसे फोन पर भी सम्पर्ककर सकते हैं□ नम्बर है- 09453487772 और 9453029126